डॉ. मीरा कुमारी
संस्कृत विभाग, सी. एम. जे. कॉलेज, खुटौना
ललित नारायण मिथिला विश्विद्यालय, दरभंगा, बिहार
ईमेल आइडी - kmeera573@gmail.com
Mobile number- 6287538352

वर्ग- बीए पार्ट 3 (H) दिनांक - 25-07-2020

विषय- व्याकरण

कारक के भेद

1. कर्त्ता - जो क्रिया करता है उसे 'कर्त्ता' कहा जाता है।
   उदाहरण, महाराज हर्ष ने दिया इस डॉन देने की क्रिया का करने वाला महाराज हर्ष है अतः करता है संस्कृत में इसका रूपांतरित इस प्रकार होगा ।महाराज: हर्ष: दत्तवान।
   दत्तवान = दा + क्तवतु (तवत् पुल्लिंग में तवत् का रुप तवान् हो जाता है। जैसे- श्रु + क्तवतु - तवत् - (तवान् - श्रुतवान्)
   स्त्रीलिंग में तवत् का तवती रूप हो जाता है । जैसे- श्रु + क्तवतु - तवत् - (ई=तवती= श्रुतवती)

चूंकि, यह बात कर्तृवाच्य मैं है इसलिए कर्त्ता से प्रथमा विभक्ति हुई है। कर्तृवाच्य में कर्ता क्रिया से उक्त होता है, अतः 'उक्ते कर्तरि प्रथमा' के अनुसार हर्ष में प्रथमा विभक्ति लगी है । महाराज शब्द हर्ष का विशेषण है अतः उसे भी प्रथम विभक्ति हुई है क्योंकि विशेषण में वही विभक्ति वही वचन और वही लिंग होता है जो विशेष में होता है।

2. कर्म - जिस वस्तु या पुरुष के ऊपर क्रिया का फल (प्रभाव)पड़ता है उसे 'कर्म 'कारक कहते हैं। साधारणत:क्रिया के संबंध में क्या शब्द से किए गए प्रश्न के उत्तर में होने वाला पदार्थ कर्म के नाम से जाना जाता है । यह कर्म कर्तृवाच्य में अनुक्त होता है। अतः उससे द्वितीया विभक्ति होती है।उदाहरण- महाराज: हर्ष: सर्वस्वं दत्तवान्। यहां देना क्रिया के फल का आश्रय सर्वस्व है ।अतः वह कर्म हुआ। इसलिए अनुक्ते कर्मणि द्वितीया के अनुसार इसमें द्वितीया विभक्ति हुई है।

अब उक्त वाक्य में यदि प्रश्न किया जाए कि महाराज हर्ष ने क्या दिया तो उसका उत्तर होता है- सर्वस्व। इसलिए भी वह दान क्रिया का कर्म होता है।

3. करण- क्रिया की सिद्धि में जो सबसे अधिक सहायक होता है उसे करण कहते हैं। साधारणत: जिस साधन से क्रिया की जाती है उसे करण कहते हैं । उदाहरण- महाराज हर्ष ने हाथों से दान दिया। यहां दान देने का साधन हाथ है इसलिए वह करण हुआ। अतः महाराज: हर्ष: हस्ता भ्याम् सर्वस्वम् दत्तवान्। इस वाक्य में हस्ताभ्याम् करण अर्थ में तृतीया विभक्ति का उदाहरण बनता है।
4. सम्प्रदान- जिसे कोई चीज सदा के लिए दे दी जाए उसे संप्रदान कहते हैं संप्रदान कारक को चतुर्थी विभक्ति कहते है। उदाहरण- महाराज हर्ष ने याचकों को सर्वस्व दान कर दिया । यहां याचक चूंकि संप्रदान है, दान

का पात्र है इसलिए इसे चतुर्थी विभक्ति होती है जिसका रूप हो जाता है याचकेभ्यः। अब यह वाक्य इस प्रकार होता है - महाराजःहर्षः याचकेभ्यः सर्वस्वम् दत्तवान् ।

5. अपादान - ध्रुवमपायेऽपादानम् (ध्रुवम् +अपाये+ अपादानम्) - जिससे कोई वस्तु अलग होती है उसे अपादान कारक कहते हैं। अपादान कारक में पंचमी विभक्ति होती है । उदाहरण -महाराजः हर्षः राजकोषात् आदाय सर्वस्वम् दत्तवान्।।

यहां हम देखते हैं कि महाराज हर्ष ने राजकोश से लेकर सर्वस्व दान कर दिया । यहां सर्वस्व का राजकोष से अलग किए जाने का भाव स्पष्ट है । इसलिए राजकोष अपादान हुआ और उसमें पंचमी विभक्ति हुई।

6. सम्बन्ध- संबंध कारक में कर्त्ता का क्रिया के साथ साक्षात् संबंध नहीं होता है इसलिए इसे संस्कृत में विभक्ति माना है लेकिन कारक नहीं। जैसे- महाराजस्य भृत्यः ।
7. अधिकरण- किसी भी क्रिया के आधार को अधिकरण कहते हैं अर्थात जहां पर क्रिया की जाती है उस जगह को अधिकरण कहते हैं । महाराज हर्ष द्वारा की गई सर्वस्व दान की क्रिया प्रयाग में संपन्न हुई थी। इसलिए प्रयाग उक्त क्रिया का अधिकरण हुआ जिसे उसमें सप्तमी विभक्ति लगकर 'प्रयागे' ऐसा रूप हुआ। जैसे- महाराजः हर्षः प्रयागे सर्वस्वम् दत्तवान् ।

   अब कर्ता कारक से लेकर अधिकरण कारक तक के उपयुक्त वाक्यों को लेकर इस प्रकार कहा जाएगा - महाराजः हर्षः सर्वस्वम् हस्ताभ्याम् याचकेभ्यः राजकोषात् प्रयागे दत्तवान्।